P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4* July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

स्त्री स्वतंत्रता की जिजीविषा : मृदुला गर्ग का साहित्य

विजयता कुमारी राम
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
पी0 एन0 दास अकादमी,
हिरापुरा, बर्नपुर, आसनसोल,
प0 बंगाल

सारांश

साहित्य अकादमी पुस्कार से सम्मानित हिन्दी साहित्य की बहुचर्चित महिला कथाकार मृदुला गर्ग का कथा संसार विविधता के व्यापक परिदृश्य में फैला है। उनका साहित्य मनुष्य के सारे सरोकारों से गहरे तक जुड़ी हुई है। सामाजिक दोष, राजनीतिक माहौल, सामाजिक वर्जनाओं के पर्यावरण से लेकर मानव मन की रेशे–रेशे की पड़ताल मृदुला गर्ग साहित्यक सजगता के माध्यम से करती हैं। मृदुला गर्ग जी अपने पाठक को भी वह स्वतंत्रता प्रदान करती है कि वे बने बनाये रास्ते में न चल, उनकी रचनाओं से ऊबे बगैर कहानियों एवं उपन्यासों को पढ़ स्वयं पाठक रोचक, कौतुहल पूर्ण एवं दार्शनिक निष्कर्ष तक पहुँच सके। इसमें ही वह अपनी रचनाकर्म की सफलता मानती है। मृदुला गर्ग साहित्य में भावना और संवेदना की गहराई एक बौद्धिक विवेचन के साथ प्रस्तुत हुई है।

मुख्य शब्द : आत्मसुखी, पैतृकसत्ता, सतीत्व, अलसभोर, स्वयंचेता।

प्रस्तावना

साहित्य समाज का आइना है, सच्चा साहित्य वहीं है, जो मानवता से जुड़ा हो। किसी भी साहित्यकार के कृति सर्जन के मूल में जब सामाजिक जीवन दृश्य का वैचारिक आधार समाहित होता है तो ही साहित्यकार की रचना पाठक से जुड़ पाती है। जिस साहित्यकार का वैचारिक आधार सुदृढ़ रहा है उनकी साहित्यक कृति ही समाज के मर्म को अपनी रचना में समाहित कर पायी हैं क्योंकि '' विचारधारा मनुष्य की रीढ़ होती है, जैसे एक वृक्ष बिन बारिश, तपते हुए दिनों में भी अपनी पाताल तक जाती जड़ों से जीवन जल और पोषक तत्व लेता रहता है उसी प्रकार विचारधारा ऊपर से किसी लेबल या ठप्पे की तरह नहीं आती, वह भीतर से मर्म की तरह रचना तत्व के साथ रिसती है इसके आभाव में लोग सतही, तात्कालिक, बाजारू या आत्मसुखी, मरणात्मक लेखन करते रहते है।''[1] स्त्री स्वतंत्रता के प्रश्न, को स्त्री को देवी का रूप देकर उसे महिमा मंडित करने के माध्यम से शुरू से ही दबाया जाता रहा है। स्त्री की अथक कहानी आदिकाल से वर्तमान समय तक के बने परिदृश्य में स्त्री की अस्मिता की खोज की है। स्त्री जन्म से ही संघर्षरत रही है जिसे पुरूष की तुलना में अधिक मानसिक व शारीरिक श्रम करते हुए दायित्व निर्वाह का बोझ उठाना पड़ता है, फिर कार्यों के मूल्यांकन के समय उसके कर्मों को शून्य कर दिया जाता है। जो स्त्री अपनी हर खुशी त्याग कर पारिवारिक दायित्व का भली–भाँति निर्वाह करती है उसे उसके बदले में असहिष्णुता एवं आँसू ही प्राप्त होते है। मायके एवं ससुराल की परम्परा निर्वाह में ही उसकी जिन्दगी समाप्त हो जाती है। हिन्दी साहित्य में ऐसे तो अनेक स्त्री–विमर्श संबंधीं उपन्यास एवं कहानियाँ लिखी गई। पुरूष कथाकारों ने भी इस संदर्भ में अपनी लेखनी चलायी परन्तु एक स्त्री जितनी बारीकी से इस दर्द को अभिव्यक्त कर सकती है उतनी पुरूष वर्ग नहीं। समकालीन हिन्दी कथा साहित्य व्यापक परिदृश्य में महिला कथाकारों ने न केवल पुरूष वर्चस्व को चुनौती दी बल्कि अपनी लेखनी के माध्यम से अपनी दृष्टि खोलकर हमारे सामने लाना प्रारम्भ किया। महादेवी वर्मा चौथे दशक में स्त्रीवादी विमर्श के अनेक उत्तेजित प्रश्नों को समाज के सामने रखती हैं उनका मानना है कि '' पुरूष के द्वारा स्त्री का चरित्र अधिक आदर्शवादी बन सकता है परंतु अधिक सत्य नहीं, विकृति के अधिक निकट पहुँच सकता है परन्तु यथार्थ के अधिक समीप नहीं।''[2] महादेवी वर्मा के वक्तव्य का आशय यह है कि पुरूष के प्रयास स्त्रियों को रूढ़ियों और परम्पराओं के चक्रव्यूह से निकलने नहीं देने का ही रहा है। अब तक पुरूष रचनाकारों ने स्त्री के जीवन की समस्याओं को बस उतना ही दिखाया जितने में उनकी पैतृकसत्ता सदा कायम रह पाये। इसी कारण सिमोन भी पुरूषों के प्रयासों को न्यायसंगत

नहीं मानती हुई लिखती है अब तक औरत के बारे में पुरूष ने जो कुछ भी लिखा तथा कहा है उस पर तनिक संदेह किया जाना चाहिए क्योंकि लिखने वाला न्यायधीश और अपराधी दोनों है।''[3] इसी कारण महिला कथाकारों ने स्त्री पीड़ा को उजागर करने के लिए उसके मौन को तोड़ने में प्रयासरत है। आज की स्त्री का सारा असंतोष इस बात को लेकर है कि मनुष्य के रूप में जो अधिकार पुरूषों के लिए सहज ही मान्य है उसे उनसे वंचित क्यों कर दिया ? जबकिं स्त्री न समाज से मुक्ति चाहती है न परिवार की जिम्मेदारियों से मुक्ति चाहती थी, वह मुक्ति चाहती थी सामाजिक रूढ़ियों से। नारी स्वतंत्र परिवेश में श्वास लेते हुए स्वयं को सिद्ध करना चाहती थी। वह स्त्री मुक्ति की चाह अपने सहभागी पुरूष से नहीं बल्कि उसकी स्वतंत्रता को नष्ट करने वाले पितृसत्ता से चाहती है।

साहित्यावलोकन

नारी की अस्मिता के खोज के प्रश्नों के उत्तर तलाशने वाली महिला कथाकारों में मृदुला गर्ग (जन्म 25 अक्टूबर 1935 पश्चिम बंगाल, कलकत्ता) का स्थान अति चर्चित रहा है। "लेखन जगत में सक्रिय कथाकार सुश्री मृदुलागर्ग का कथा संसार विविधता के अछोर तक फैला हुआ है....समाज देश, राजनैतिक माहौल, सामाजिक वर्जनाओं, पर्यावरण से लेकर मानव मन की रेशे–रेशे की पड़ताल करती नजर आती हैं।"[4] ये एक ऐसी साहित्यकार मानी जाती है जिनके मनसा–वाचा–कर्मणा के धरातल पर एकान्विति देखने को मिलती है। मृदुला गर्ग ने अपनी रचनाओं में नारी के मन की सूक्ष्म से सूक्ष्म भावनाओं एवं स्त्री चेतना के मर्म तक पहुँचने का प्रयास किया हैं। वे कहती भी हैं ''चेतना का संबंध अपने प्रति सजग होना, विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में रखकर अपनी स्थिति का मूल्यांकन करना है , चेतना के सहारे व्यक्ति निजी जीवन दृष्टि से प्रेरित होकर इतिहास संस्कृति और मानवीय संबंधों को पुनः विश्लेषित करता है। इस प्रकार जो दृष्टि नारी की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक छवि के तिलिस्म को तोड़े, वह नारी चेतना है।''[5] स्त्री की यहीं सजग चेतना उसे परम्परागत छवी को तोड़ते हुए अपने लिए नयी स्वतंत्र जीवन दृष्टि की ओर उसे उन्मुख करती है, मृदुला जी नारी के इस बदलाव का समर्थन अपने रचनाओं के माध्यम से करती है।

मृदुला गर्ग नारी स्वतंत्रता की पक्षधर कथाकार हैं, वे अपनी निजी जीवन में भी स्वतंत्रता को अनिवार्य मानती है। उनकी लेखनी में उनका स्वयं के प्रति जीवन इच्छा झलकती है। उनकी स्वतंत्र मनोवृत्ति नारी के सतीत्व और प्रेम के नये अर्थ की अभिव्यक्ति देते हुए कहती है–''बहुत सा लेखन ऐसा जरूर होता है जो चकाचौंध करने के लिए लिखा जाता है। इसमें सेक्स का खुला चित्रण भी आता है और राजनीति शोषण से लेकर सतही चीख–पुकार भी। पर मैं समझती हूँ कि गंभीर साहित्य सेक्स के खुले चित्रण के पीछे एक खास सामाजिक प्रक्रिया काम कर रही है। हमारे समाज और साहित्य में सेक्स को अधिकतर एक 'मिस्टिक या तिलस्म' बनाकर पेश किया जाता रहा है साथ ही इस तरह जोड़ा जाता रहा है कि नारी का सतीत्व ही उनकी पहचान बनकर रह गया है। इस रवैये में नारी को गुलाम बनाकर रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। सेक्स के इस तिलस्म को तोड़कर उसे सहज जीवन प्रक्रिया के रूप में दिखलाकर हम कहीं इस मानसिकता को भी तोड़ते है। धीरे धीरे इस आक्रामक दृष्टि में संतुलन और परिपक्वता आ जाएगी। कुछ हद तक आ भी गयी है। मेरे अपने लेखन में जहाँ जहाँ सेक्स का खुला चित्रण हुआ जो बहुत कम हुआ है वहाँ इसका आशय यह दिखलाना रहा है कि प्रेमहीन सेक्स दरअसल नारी के लिए परवशता या परतंत्रता की निशानी है मुक्ति की नहीं।''[6] इस तरह मृदुला जी नारी स्वतंत्रता के मर्म को प्रकाशित करती है। उनका रचना संसार नारी के अन्दर के दर्द को व्यक्त करता है। मृदुला जी सभी स्त्रियों के लिए नयी दृष्टि एवं स्वतंत्रता चाहती है। उन्होंने सात उपन्यासों की रचना की है उनका पहला उपन्यास ''उसके हिस्से की धूप'' 1975 ई० में प्रकाशित हुआ, इसके बाद उन्होने ''वंशज'', ''अनित्य'', ''चित्तकोबरा'', ''मैं और मैं'', "कठगुलाब", "मिलजुल–मन" उपन्यासों की रचना की हैं। विषय के दृष्टि से देखे तो ''उसके हिस्से की धूप'', ''चितकोबरा'', ''मैं और मैं'' विवाहोत्तर संबंधों में परम्पराओं का विरोध करते उपन्यास है जिसमें उन्होंने यह बताया कि नारी अपनी परम्पराओं से जुड़ी भी रहना चाहती है किन्तु उसके साथ–साथ वह अपने लिए एक और मार्ग भी खोजना चाहती है वो ये जानती है कि विवाह अपने लिए महत्वपूर्ण है परन्तु विवाह संबंध निर्वाह करने के लिए वह अपने स्वयं के अस्तित्व का स्वाहा नहीं कर सकती। मृदुला गर्ग अपनी रचनात्मक सृजन के संदर्भ में स्वयं कहती है कि ''जीवन में जो कुछ घटित होता है जो गहरी छूता है व्यथित करता है जो न काबिले बरदास होता है, सभी तो मन के गुप्त कोने में छिपे रहते है, जहाँ मेरे परिचित दोस्त सगे–संबंधी झाँक कर नहीं देख पाते, सब कुछ अकेले में झेलती चली जाती हूँ, फोड़ों के तरह अनुभव दुखते है, टीसते है, धीरे धीरे पकते है और एक दिन कहानी या उपन्यास का रूप लेकर फूट पड़ते है। जो सोचती हूँ, महसूस करती हूँ जो व्यवस्था मुझमे वितृष्णा उत्पन्न करती है अन्याय जो क्रोध का उफान लेकर आता है वहीं तो मेरी कहानियाँ एवं उपन्यासों में कथ्य का रूप उभरता है।''[7] यहीं कारण है कि मृदुला गर्ग के साहित्य में स्त्री विमर्श के प्रत्येक संदर्भ को सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि से उठाया गया है।

वंशज उपन्यास में परिवार को दो पीढ़ियों के मध्य के सोच के अन्तराल का दर्शन प्राप्त होता है। एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को समझना नहीं चाहती और अपनी अपनी दृष्टिकोण एवं विचारों को एक दूसरे पर लादना चाहती है। "कठगुलाब" उपन्यास में लेखिका बताती है चाहे भारतीय परिवेश हो या विदेशी परिवेश हो हर जगह नारी की स्थिति कमोवेश एक सी ही है। विदेशों में भी नारी का बौद्धिक, शारीरिक शोषण निरंतर होता रहता है जब जब पुरूष चाहता है तो उसे घर का मालिक बना देता है और जब स्त्री पुरूष की किसी भी बात पर असहमति व्यक्त करती है तो पुरूष उसे घर का एक कोना भी देना स्वीकार नहीं कर पाता है।

"अनित्य" उपन्यास में मृदुला गर्ग ने व्यक्ति संबंधों का विश्लेषण करते हुए उसमें आये बदलाव के कारणों की जाँच–पड़ताल की है। 'अनित्य' उपन्यास राजनैतिक समस्याओं एवं विसंगतियों को हमारे सामने लाकर रखती है। साथ ही स्त्री जीवन के स्वतंत्रता के संदर्भों को भी उठाती है। इस उपन्यास की पात्र प्रभा, शुभा तथा श्यामा एक ही परिवार की स्त्रियाँ है। श्यामा-माँ तथा प्रभा व शुभा दोनों क्रमशः उनकी पुत्रियाँ है। तीनों ही सुशिक्षित है। प्रभा तथा शुभा कॉलेज में अध्ययनरत है। ये स्त्रियाँ परिवार में सदैव स्वतंत्र जीवन जी रही है तात्पर्य यह है कि इनकी इच्छाओं तथा निर्णय में परिवार के पुरूष सदस्यों का हस्तक्षेप नहीं है समाज में भी इन्हें सम्मानजनक स्थान प्राप्त है। अब यह आवश्यक नहीं रह गया है कि सम्मानजनक जीवन जीने के लिए स्त्री किसी पुरूष का हाथ थाम कर चले।

मृदुला गर्ग के चित्तकोबरा उपन्यास तो नारी स्वतंत्रता को लेकर बहसों के कटघरे में रखते हुए कई बहसों से रूबरू हो चुका है। इस उपन्यास में नारी अपनी स्वतंत्रता एवं स्वछंद प्रेम को सर्वोपरि मानती है उम्र के आखिरी दौर में नायिका कहती है ''वर्षा की बूँदे मेरे बालों की तरह सफेद है पीछे कभी अंधेरा झिलमिला जाता है कभी उजाला। बादल से बारिश बरस रही है, भीतर ख्वाब पल रहे है.....मान लो इतने बरस बाद सहसा आवाज आयी रिचर्ड आकर मेरे कमरे की देहरी पर खड़ा हो जाए..... आसमान स्याही उड़ेल रहा है..... बारिश सफेदी सब कुछ संभव है।''[8] मृदुला गर्ग ने नारी के निरंतर कर्मरत जीवन को कंठगुलाब उपन्यास के माध्यम से अभिव्यक्ति दी हैं। नारी के जीवन में हर क्षण बस ''काम–काम और काम, थकान, थकान और थकान। नींद नहीं के बराबर आती, भूख मरी–मरी सी लगती। शरीर में प्राण फिर भी बसे रहे। देह की मांगों से उदासीन मैं जीती चली गयी और हर जागते पल, उसे काम में लगायें रही। लोग मुझे देखते और कहते – 'ए बुमेंस वर्क इज नेभर इन्ड' (एक औरत का काम कभी खत्म नहीं होता।)''[9] पुरूष प्रधान नारी को कभी अन्नपूर्ण देवी कभी द्रोपदी कभी लक्ष्मी कहते हुए अपनी स्वार्थ सिद्ध करता आया है। ''नैतिकता के समूचे प्रतिमान पितृक है, स्त्री के विरोध में है, सारे नैतिक नियमों का एक मात्र लक्ष्य स्त्री समाज को नियंत्रित करना और निर्धारित करना है।''[10] मृदुला गर्ग ने 'चुकते नहीं सवाल' में महाभारत का उदाहरण देते हुए नारी के त्याग और सहनशीलता को द्रोपदी के रूप में दर्शाती है। ''वनगमन करने पर पांडवों को आभाव का सामना करना पड़ा तब अन्न की व्यवस्था करने की चिंता हुई द्रोपदी को। यद्यपि अर्थ उपार्जन का दायित्व उसका नहीं, पुरूषों का था, कृष्ण के अनुग्रह से उसे अक्षय पात्र मिला, जिसकी विशेषता यह थी कि वह तब तक भरा रहता था जब तक द्रोपदी भोजन न कर ले, नारी मुक्ति की प्रवक्ताओं के लिए ऐसा करने के पूर्ण केवल यह नहीं कि द्रोपदी सबसे बाद में खाती थी बल्कि यह कि अन्न–व्यवस्था के लिए चिंता व उपक्रम उसने किया। आज भी भारत की अस्सी प्रतिशत स्त्रियाँ यह काम कर रही है। इस मानसिक परतंत्रता से आजादी के बिना स्त्री को सामाजिक स्वतंत्रता कभी प्राप्त नहीं हो सकेगी। अपनी कहानी 'हरी बिंदी' में स्त्री एवं चेतना की स्वतंत्रता की छवी को प्रस्तुत करती हुई कहती है कि'' तुक की क्या तुक है।''[11] उनके कहने का आशय तुक अर्थात रूढ़िगत परम्परा को निर्वाह करने में कैसी तुक है। वे हरी बिंदी के माध्यम से स्त्री एवं चेतना की वह कहानी प्रस्तुत करती है जहाँ स्त्री अपनी स्वतंत्रता को उत्सव के रूप में मानती है भले ही वह उत्सव एक ही दिन का क्यों ना हो। अपने साक्षात्कार में मृदुला जी कहती भी है'' प्रत्येक नारी को जीवन में कम से कम एक दिन अपनी इच्छानुसार जीना चाहिए बिना किसी रोक टोक के।'' हरी बिंदी कहानी की नायिका को ऐसा दिन तब सुलभ हो पाता है जब उसका पति राजन अलसभोर दिल्ली जा चुका है। ''आज का सारा दिन उसका अपना हैं, बगैर किसी दखलंदाजी के। बस फिर क्या.....नीले सूट के साथ माथे पर 'हरी बिंदी' साँट बेतुक से तुक मिलती, मौसम से बेपरवाह निकल पड़ती बम्बई की सड़कों पर बिन्दास। यह कहानी स्वयंचेता स्त्री का वह प्रस्थान बिन्दु है जहाँ वह अपने आप के साथ कितनी काराविहीन, वर्जनाविहीन और तनावविहीन सार्थकता से लवरेज है। 'हरी बिंदी' के कंट्रास्ट का प्रतीक उसके निजत्व के रदीफ को कायनात के काफियों से जोड़ उसके अपने होने की तुक को बिठा देता है।'' [12] यह तुक स्त्री की स्वतंत्रता से जुड़ता है। ऐसा प्रतीत होता है कि हरी बिंदी कहानी को ही 'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास में विस्तृत रूप दिया गया है। यह उपन्यास वैवाहिक जीवन की समस्याओं को इंगित करता हुआ आधुनिक युग में विवाह करने के पश्चात् औरत पति की दासता की अस्वीकृत के दृश्य प्रस्तुत करता है। उपन्यास की नायिका पुरूष या पति का सहयोग तो चाहती है परन्तु हर एक कार्य उसके साथ करे या उसके छायातले हो वह यह नहीं चाहती। मनीषा कहती है '' यह वैवाहिक जीवन भी अजीब चीज है। जो करो एक साथ। साथ बैठो, साथ बोलो, चाहे बोलने को कुछ हो, चाहे नहीं।''[13] विवाह की विडम्बना 'हरी बिंदी की नायिका' एवं सुषमा दोनों के सामने आधुनिक युग की समस्या के रूप में आ कर खड़ी है। विवाह संबंध की असमंजस वंशज उपन्यास में भी देखने को मिलती है। तनाव लाने में पति–पत्नी दोनों ही उत्तरदायी होते है। जब पुरूष की एडजेस्टमेंट में विश्वास नही तो स्त्रियाँ क्यों हर बात में एडजेस्टमेंट करे।

स्वतंत्रता के पश्चात निरन्तर परिवर्तित हो रहे परिवेश ने व्यक्ति को मर्यादाहीन, सामाजिक जीवन असंस्कृत आचरण खण्डित मानवीय संबंध को यथार्थ रूप से भोगने के लिए विवश किया है। हमारे आदर्श हमारे व्यवहार सभी में बहुत बड़ा अन्तर आ गया है, इन्हीं सब पहलुओं का यथार्थ चित्रण मृदुला गर्ग ने चितकोबरा उपन्यास में किया है।

'मैं और मैं' उपन्यास में लेखिक लेखन और वास्तविक जिन्दगी के संबंधों की पड़ताल करती है। झूठ और सच के सापेक्ष पारदर्शी परदे के पीछे माया लोक के रहस्यों को दिखाता है। उनकी 'कितनी कैदे', कहानी संग्रह स्त्री स्वतंत्रता, झूठा दिखावा, युवा मन की समस्या

एवं पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, सैक्स जनित कुंठा, विवाहोत्तर संबंधों, दफ्तरों में फैला भ्रष्टाचार, विधुर विवाह आदि संदर्भों पर प्रकाश डाला गया है। "डैफोडिल जल रहे", कहानी संग्रह में नारी मन की अकुलाहट और मृत्यु बोध अनचाहा गर्भ, मानसिक तनाव आदि भावनाओं को व्यक्त करती है। "टुकड़ा–टुकड़ा आदमी'' कहानी संग्रह में मृदुला गर्ग नें आम आदमी का पक्ष लेते हुए उनके दुःख–दर्द की कहानी कहते हुए किसानों के मजदूर में तबदील होने, ग्रामीण अंचल के रूढ़ीवादी जीवन मूल्यों पति–पत्नी के संबंधों, नाजायज संबंधों के मध्य व्यक्तिगत स्वतंत्रता की खोज करती स्त्री मानसिकता को चित्रित करती है। अतः हम कह सकते है कि सामाजिक जीवन के प्रति स्त्री विमर्श एवं स्त्री स्वतंत्रता के प्रत्येक प्रश्न को मृदुला गर्ग जी बड़ी ही जीवन्तता के साथ अपनी रचनाओं में वाणी देती है।

उद्देश्य

इस आलेख के माध्यम से मृदुला गर्ग की स्त्री विमर्श संबंधित मान्यताओं की अभिव्यक्ति हुई है। आज भी स्त्री पारम्परिक संस्कारों में जकड़ी है परावलम्बी है आश्रित है इस कारण यह आलेख सामसामयिक प्रासंगिकता से जुड़ा हुआ है। मृदुला गर्ग की रचनाएँ प्रगतिशील स्त्री को दर्शाती है जो हमारे समाज के स्त्री वर्ग को प्रेरणा देती है वे समाज के मूल्यों में परिवर्तन को भी स्त्री की स्वतंत्रता के हक में बतलाती है स्त्री का शक्ति प्राप्त करना विशेषकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना स्त्री के लिए वह परम आवश्यक मानती है। स्त्री अस्मिता की पहचान व प्रतिष्ठा के सवाल उठा कर मृदुला गर्ग स्त्री को पहचान व प्रतिष्ठा प्राप्त कराने का प्रयत्न अपनी रचनाओं के माध्यम से करती है। स्त्री स्वतंत्रता प्राप्ति घर से ही प्रारम्भ हो सकती है अगर समाज की महत्वपूर्ण इकाई परिवार में पति पत्नी संबंध में आपसी समझ का आभाव होगा तो स्थिति दिन पर दिन बत्तर होती जायेगी, ''पति पत्नी के बीच पसरे हुए दाम्पत्य के जलते धुघाते बनते बिगड़ते आपसी रिश्तों के तेवर पर तो बहुत कुछ लिख जा चुका है और लिखा जा रहा है मगर इन बारीक संबंधों के पेचीदियों से अलग हट यदि किसी ने बेलाग और बेलीस तरीके से लिखा है तो वह है मृदुला गर्ग।''[14] इनके इस महत्वपूर्ण योगदान से हिन्दी साहित्य सदा धनी बना रहेगा।

निष्कर्ष

मृदुला गर्ग का रचना संसार सामाजिक ज्वलंत संदर्भों को स्वयं में समाहित करता है क्योंकि उन्होने उस दौर में लेखन प्रारम्भ कि जिस समय व्यक्ति की जीवनशैली में बहुत बड़ा परिवर्तन हो रहा था। प्राचीन जीवन शैली के बहुत से मानदण्ड टूट कर बिखर रहे थे, जो नया समाज तैयार कर रहा था, उस समाज में शिक्षा का प्रसार, आधुनिकीकरण एवं पाश्चात्य सभ्यता के स्त्री की अस्मिता एवं स्वतंत्रता की जिजीविषा दिखाई दे रहा था। मृदुला गर्ग के रचनाकाल की सामाजिक पृष्ठभूमि उनकी साहित्य की नींव तैयार करती है। इनके साहित्य में देशी–विदेशी परिवेश में स्त्री–पुरूष के संबंधों के अन्तर्द्वंद भावाभिव्यक्ति मार्मिकता के साथ हुई है। व्यक्ति के अकेलेपन की नियति दाम्पत्य जीवन में आया बदलाव अहम की भावना नैतिकता का हास नारी का प्रगतिशील रूप स्त्री शिक्षा सेक्स जनित कुंठा, उच्श्रृंखला नारी रूप व्यवस्तता आदि बिन्दुओं पर लेखिका ने अपने विचार प्रकट किये है। लेखिका का प्रयास यह रहा है कि मनुष्य अपने पतन की ओर जाते हुए स्थिति को पहचानकार उन्नति करके समाज का सशक्त नागरिक होने की शक्ति अर्जित कर सके। इसलिए हम कह सकते है कि "लेखन जगत में सक्रिय कथाकार सुश्री मृदुलागर्ग का कथा संसार विविधता के अछोर तक फैला हुआ है....समाज देश, राजनैतिक माहौल, सामाजिक वर्जनाओं, पर्यावरण से लेकर मानव मन की रेशे–रेशे की पड़ताल करती नजर आती हैं।"(15) इस पड़ताल में वह समाज के प्रत्येक व्यक्ति के दुःख–दर्द को अपनी पीड़ा की तरह आत्मसात करती है। एक स्त्री होने के नाते वह स्त्री की स्वंतत्रता की जिजीविषा को बखूबी समझती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *ज्ञानरंजन हास्यरस, सपना नहीं, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण (1997)– पृष्ठ 97*
2. *महोदेवी वर्मा – श्रृंखला की कड़िया – पृष्ठ 85 लोक भारती प्रकाशन संस्करण–2001*
3. *सिमोन द बोउवार स्त्री उपेक्षिता पृष्ठ 28, अनु0 प्रभा खेतना हिन्दी पाकेट–बुक्स नई दिल्ली–2004*
4. *मृदुला गर्ग – प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन दुसरा संस्करण–2015 – पृ0–5*
5. *मासिक हंस अंक मई 1993 – पृष्ठ 34*
6. *रामकली सराफ – समकालीन हिन्दी कथा लेखिकाएँ – पृष्ठ 266, राजकमल प्रकाश नई दिल्ली–2000*
7. *इनकी कलम से इंटरनेट में साक्षात्कार द्वारा*
8. *डॉ० विभा कुमारीः– मृदुला गर्ग और मैत्रीय पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श– पृष्ठ 206, पंकज बुक्स दिल्ली–2014*
9. *मृदुला गर्ग– 'चित्तकोबरा – पृष्ठ 149 नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली–2004*
10. *मृदुला गर्ग – 'कठगुलाब – पृष्ठ 89 भारती ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली–1998*
11. *डॉ० मुक्ता त्यागी – समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी विमर्श– पृष्ठ 32, अमन प्रकाशन, कानपुर–2012*
12. *मृदुला गर्ग – संगति विसंगति – पृष्ठ 9 नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली–2004*
13. *मृदुला गर्ग – उसके हिस्से की धूप – पृष्ठ 18, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली–1987*
14. *मृदुला गर्ग – संगति विसंगति– भूमिका – पृष्ठ 5, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली–2004*
15. *मृदुला गर्ग – प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन दूसरा संस्करण–2015 – पृ0–5*